सत्यमेव जयते

राजस्थान सरकार

जयपुर

जिला प्रशासन, जयपुर

सत्यमेव जयते

मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने 'पंच–गौरव' कार्यक्रम की शुरूआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में 'पंच–गौरव' के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

पंच–गौरव कार्यक्रम के तहत जयपुर जिले के लिए रत्नाभूषण को उत्पाद, आंवला को उपज, लिसोड़ा को वनस्पति प्रजाति, कबड्डी को खेल और आमेर दुर्ग को पर्यटन स्थल के रूप में चिह्नित किया गया है।

मुझे विश्वास है कि पंच–गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जयपुर जिले में पंच–गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

(भजन लाल शर्मा)

सत्यमेव जयते

संदेश

राजस्थान सरकार अंत्योदय की भावना के साथ सुशासन में नवाचारों द्वारा जन कल्याणकारी योजनाओं और सेवाओं का लाभ आमजन तक प्रभावी रूप से पहुंचाने के लिए पूर्णतः समर्पित एवं प्रतिबद्ध है। इस क्रम में राज्य के प्रत्येक जिले में विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण के साथ ही जिलों के सर्वांगीण विकास हेतु पंच–गौरव कार्यक्रम शुरू किया गया है।

पंच–गौरव के माध्यम से जिलों की ऐतिहासिक धरोहर का संरक्षण एवं संवर्धन, धार्मिक, सांस्कृतिक, खेल एवं उपज को विकसित करने का प्रयास करना तथा पंच–गौरव को लेकर स्थानीय समुदाय में समझ विकसित करने एवं रोजगार की दृष्टि से जनउपयोगी बनाकर समाज के प्रत्येक व्यक्ति की भागीदारी सुनिश्चित करने का कार्य किया जायेगा।

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि जिला प्रशासन, जयपुर द्वारा पंच–गौरव को प्रोत्साहित करने के लिए इस महत्वपूर्ण विवरणिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

(जोगाराम पटेल)
कैबिनेट मंत्री
संसदीय कार्य, विधि एवं विधिक संसदीय कार्य और विधि परामर्शी
राजस्थान सरकार

सत्यमेव जयते

संदेश

राजस्थान के प्रत्येक जिले में विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण एवं संवर्धन के साथ आर्थिक उन्नति एवं रोजगार के अवसरों में बढ़ोतरी कर प्रदेश के सभी जिलों के सर्वांगीण विकास हेतु राज्य में पंच–गौरव कार्यक्रम शुरू किया किया गया है।

पंच–गौरव कार्यक्रम का प्रमुख लक्ष्य स्थानीय हस्तशिल्प उत्पादों की गुणवत्ता एवं विपणन क्षमता में सुधार के साथ स्थानीय क्षमताओं का संवर्धन, खेलों के माध्यम से स्वास्थ्य में सुधार एवं रोजगार के अवसर सृजित करना है।

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि जिला प्रशासन जयपुर द्वारा पंच–गौरव की कार्ययोजना से जन–जन को अवगत करवाने के लिए इस महत्वपूर्ण विवरणिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

(श्रेया गुहा)
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
ग्रामीण विकास विभाग,
राजस्थान सरकार

सत्यमेव जयते

संदेश

विरासत एवं पर्यावरण का संरक्षण, आर्थिक उन्नति, रोजगार के अवसर सृजित करना एवं समृद्ध जिले के संकल्प को साकार करने की दिशा में राज्य सरकार द्वारा पंच–गौरव कार्यक्रम की शुरूआत की गई है।

राज्य सरकार ने जिलों के समग्र विकास के लिए पंच–गौरव को विकसित करने का संकल्प लिया है। इस कड़ी में जयपुर जिले में पंच–गौरव **रत्नाभूषण**, **आंवला**, **लिसोड़ा, कबड्डी** एवं **आमेर दुर्ग** को चिह्नित किया गया है।

पंच–गौरव की कार्ययोजना से आमजन को अवगत करवाने के लिए जिला प्रशासन जयपुर द्वारा इस महत्वपूर्ण विवरणिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

(पूनम)
संभागीय आयुक्त
संभाग–जयपुर

सत्यमेव जयते

संदेश

राज्य सरकार द्वारा स्थानीय विशेषताओं, समुदाय की भागीदारी, विकासात्मक दृष्टिकोण एवं स्थानीय युवाओं/लोगों को प्रशिक्षण और जानकारी उपलब्ध करवाने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल करते हुए राज्य को समृद्ध एवं विकसित बनाने की दिशा में पंच–गौरव कार्यक्रम शुरू किया गया है।

जयपुर के पंच–गौरव कबड्डी, रत्नाभूषण, आंवला, लिसोड़ा एवं आमेर दुर्ग की महत्ता, उपयोगिता एवं आवश्यकता से आमजन को परिचित करवाने के साथ–साथ स्थानीय क्षमताओं का संवर्धन, खेलों के माध्यम से स्वास्थ्य में सुधार, उत्पादों की गुणवता एवं विपणन क्षमता में सुधार कर जिले को राज्य में विशिष्ट पहचान दिलाना हमारी प्राथमिकता है।

मुझे आशा है कि यह विवरणिका जिले के पंच–गौरव की कार्ययोजना से आमजन को अवगत करवाने एवं उनकी भागीदारी सुनिश्चित कराने में सहायक सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं सहित।

(डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी)
जिला कलक्टर, जयपुर

प्रेरणास्त्रोत

डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ⇨ जिला कलक्टर, जयपुर

श्रीमती विनीता सिंह ⇨ अतिरिक्त जिला कलक्टर (प्रथम), जयपुर

संकलनकर्ता

श्री बाबूलाल मीना ⇨ संयुक्त निदेशक, आर्थिक एवं सांख्यिकी, जयपुर

डॉ. सुदीप कुमावत ⇨ सहायक निदेशक, आर्थिक एवं सांख्यिकी, जयपुर

अनुक्रमणिका

क्र.स	विषय सूची	पृष्ठ संख्या
1	**प्राक्कथन**	1
2	**जयपुर एक नज़र में**	2
3	**उद्योग विभाग** • एक जिला–एक उत्पाद रत्नाभूषण का परिचय • रत्नाभूषण की वर्तमान स्थिति • रत्नाभूषण को प्रोत्साहित करने हेतु कार्ययोजना	3–7
4	**वन एवं पर्यावरण विभाग** • एक जिला–एक वनस्पति प्रजाति लिसोड़ा का परिचय • लिसोड़ा की वर्तमान स्थिति • लिसोड़ा को प्रोत्साहित करने हेतु कार्ययोजना	8–12
5	**कृषि एवं उद्यानिकी विभाग** • एक जिला–एक उपज आंवला का परिचय • आंवला की वर्तमान स्थिति • आंवला को प्रोत्साहित करने हेतु कार्ययोजना	13–17
6	**पर्यटन विभाग** • एक जिला–एक पर्यटन स्थल आमेर दुर्ग का परिचय • आमेर दुर्ग की वर्तमान स्थिति • आमेर दुर्ग को प्रोत्साहित करने हेतु कार्ययोजना	18–22
7	**खेल एवं युवा मामलात विभाग** • एक जिला–एक खेल कबड्डी का परिचय • कबड्डी की वर्तमान स्थिति • कबड्डी को प्रोत्साहित करने हेतु कार्ययोजना	23–27

INDINEWS

प्राक्कथन

राज्य की भौगोलिक विशेषताएं सम्पूर्ण भू–भाग पर समान नहीं है इसलिए राज्य के प्रत्येक जिले में विद्यमान संभावनाओं को पहचान कर उन्हें राज्य, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर रेखांकित करने के उद्धेश्य से पंच–गौरव कार्यक्रम शुरू किया गया है। इससे प्रत्येक जिले की विरासत का संरक्षण, संवर्धन एवं सर्वांगीण विकास करने में मदद मिलेगी तथा इन गतिविधियों के माध्यम से जिले में आर्थिक उन्नति एवं रोजगार के अवसर सृजित होंगे। जयपुर के पंच–गौरव एक जिला–एक उत्पाद **रत्नाभूषण**, एक जिला–एक उपज **आंवला**, एक जिला–एक वनस्पति प्रजाति **लिसोड़ा**, एक जिला–एक खेल **कबड्डी** एवं एक जिला–एक पर्यटन स्थल **आमेर दुर्ग** चिह्नित किये गए है।

पंच–गौरव से स्थानीय विशेषताओं को प्रोत्साहन, उत्पादों की गुणवत्ता एवं विपणन क्षमताओं में सुधार करने के साथ ही स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी। कार्यक्रम के तहत विशेषज्ञों की समितियां गठित की जायेगी जिससे उत्पादों और सेवाओं की गुणवत्ता का मूल्यांकन कर उनमें आवश्यक सुधार करने में सहायता मिलेगी। स्थानीय युवाओं/लोगों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित कर आधारभूत संरचना एवं समता संवर्द्धन को विकसित करने वाले कार्य किये जायेंगे।

पंच–गौरव को विकसित करने के लिए राज्य स्तर एवं जिला स्तर पर समन्वय समिति का गठन किया गया है। जिला स्तरीय समिति में जिला कलक्टर अध्यक्ष, उद्योग, कृषि एवं उद्यानिकी, वन्य एवं पर्यावरण, खेल एवं युवा मामलात, पर्यटन, सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार, सूचना एवं जनसम्पर्क, जिला कलक्टर द्वारा नामित राजस्थान लेखा सेवा का अधिकारी सदस्य है तथा संयुक्त निदेशक आर्थिक एवं सांख्यिकी सदस्य सचिव है। यह समन्वय समिति पंच–गौरव को प्रोत्साहन देने के लिए कार्ययोजना तैयार करेगी तथा इसकी कार्यप्रगति का विश्लेषण एवं समीक्षा हेतु प्रत्येक तिमाही में कम से कम एक बार बैठक आयोजित की जायेगी।

जिले में पंच–गौरव के तहत उपज एवं वनस्पति प्रजाति का संग्रहण, भण्डारण, पैकेजिंग, प्रसंस्करण, नई प्रौद्योगिकी, उन्नत कृषि तकनीकों और स्थानीय बाजारों को बढ़ावा देकर विकसित करने का कार्य किया जाएगा। उत्पाद के विकास हेतु बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ बनाकर, पारंपरिक कौशल को बढावा देकर, डिजिटल मार्केटिंग के माध्यम से विश्व स्तर पर विकसित किया जाएगा। पर्यटन के लिए पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करना, सेवाओं एवं सुविधाओं का उन्नयन करने का कार्य मजबूती से किया जाएगा। खेल के लिए ग्राम पंचायत/ब्लॉक स्तर/जिला स्तर पर कबड्डी कॉम्प्लेक्स, ट्रेनिंग सेंटर, हॉस्टल आदि का उन्नयन कर खिलाड़ियों को पोषण एवं प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा।

पंच–गौरव को जिले में विकसित करने के लिए विभाग की योजनाओं, नीतियों एवं कार्यक्रमों के माध्यम से वित्त पोषण किया जाएगा इसके अतिरिक्त MPLAD, MLALAD, गैर सरकारी संगठनों, सीएसआर फाउण्डेशन, उद्योग संघों, भामाशाह का सहयोग लेकर पंच–गौरव को विकसित करने की कार्ययोजना पर कार्य किया जाएगा।

जयपुर एक नज़र में

ढूंढ नदी के किनारे बसा जयपुर शहर राजस्थान की राजधानी है, इसे गुलाबी नगर तथा पूर्व के पेरिस के नाम से भी जाना जाता है। इस नगर की स्थापना आमेर के कछवाहा वंश के शासक जयसिंह द्वितीय ने 18 नवम्बर, 1727 को की थी। इस सुनियोजित शहर के वास्तुकार विद्याधर भट्टाचार्य थे, जिनकी विशिष्ट स्थापत्य कला ने जयपुर को देश–विदेश में अद्वितीय स्थान दिलाया। यह नगर 9 वर्गों के सिद्धान्त पर बसाया गया। शहर के चारों ओर कुल 7 दरवाजे है। यहॉ के भव्य महलों, राज प्रासादों, हवेलियों, वेधशाला, चौकड़ीनुमा बाजारों, हस्तशिल्प एवं रत्नाभूषण ने जयपुर शहर को पर्यटकों के लिए अनूठा आकर्षण का केन्द्र बना दिया है।

जयपुर जिला राजस्थान के पूर्वी भाग में 26,23′ व 27,51′ उत्तरी अक्षांश एवं 74,55′ व 76,50′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इसके उत्तर में राजस्थान का सीकर, कोटपूतली–बहरोड़, दक्षिण में टोंक जिला, पूर्व में अलवर व दौसा जिले तथा पश्चिम में डीडवाना–कुचामन व अजमेर जिले है।

जयपुर के पूर्व व उत्तर का क्षेत्र पर्वत श्रेणियों व बहुसंख्य शिखरों से भरा हुआ है। ये पहाड़ियां व शिखर अरावली पर्वत समूह के है। जिले की जलवायु शुष्क एवं स्वास्थ्यप्रद है तथा विभिन्न स्थानों पर सर्दी व गर्मी अत्यधिक होती है। जिले की अधिकांश नदियां अपरिवार्षिक है। इनमें से बाणगंगा व साबी नदी महत्वपूर्ण है। सांभर झील, जिले की एक मात्र उल्लेखनीय प्राकृतिक झील है, जो देश में नमक का सबसे बड़ा स्त्रोत है। जिले की समुद्र तल से ऊँचाई सामान्यतया 122 से 183 मीटर है तथा भूगर्भीय जल का स्तर लगभग 70 मीटर है।

यह जनसंख्या की दृष्टि से राज्य का सबसे बड़ा नगर है। जयपुर की वर्तमान जनसंख्या लगभग 80 लाख से भी अधिक है। जिले को प्रशासनिक दृष्टि से 2 नगर निगम, 3 नगर परिषद, 11 नगर पालिका, 16 उपखण्ड, 21 तहसील, 13 उपतहसील, 19 पंचायत समिति, 498 ग्राम पंचायत, 1760 राजस्व गांव, 134 गिरदावर सर्किल एवं 533 पटवार सर्किल में विभाजित किया गया है।

औद्योगिक दृष्टि से जयपुर राज्य का एक उन्नत जिला है। सीतापुरा, कनकपुरा, मानपुरा–माचेड़ी, विश्वकर्मा, झोटवाड़ा प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र हैं। जिले में विविध प्रकार के खनिज मिलते है, जिनमें तांबा, नमक, डोलोमाईट, लोहा अयस्क, चूना पत्थर, कांच और रेत मुख्य है। जयपुर जिला रत्नाभूषण, लाख व हाथीदांत का काम, सांगानेरी एवं बगरू छपाई, पीतल की नक्काशी, ब्लू पॉटरी, रत्न व्यवसाय, संगमरमर की मूर्तियों के लिए विश्व प्रसिद्ध है।

राजस्थान में जयपुर जिले जीडीडीपी (सकल जिला घरेलू उत्पाद) वर्ष 2023–24 में प्रचलित कीमतों पर 212335 करोड़ रूपये होने का अनुमान है। वर्ष 2023–24 में स्थिर कीमतों (2011–12) पर 6.60 प्रतिशत की चक्रवृद्धि औसत वृद्धि दर दर्ज की गई। वर्ष 2023–24 में क्षेत्रवार योगदान कृषि और संबद्ध गतिविधियों का 11.26 प्रतिशत, उद्योग क्षेत्र का 34.02 प्रतिशत एवं सेवा क्षेत्र का 54.72 प्रतिशत रहा है साथ ही अंतिम अनुमान के अनुसार वर्ष 2023–24 में प्रचलित कीमतों पर प्रति व्यक्ति आय 236666 रुपये होने का अनुमान है जो वर्ष 2011–12 में 76588 रुपये थी।

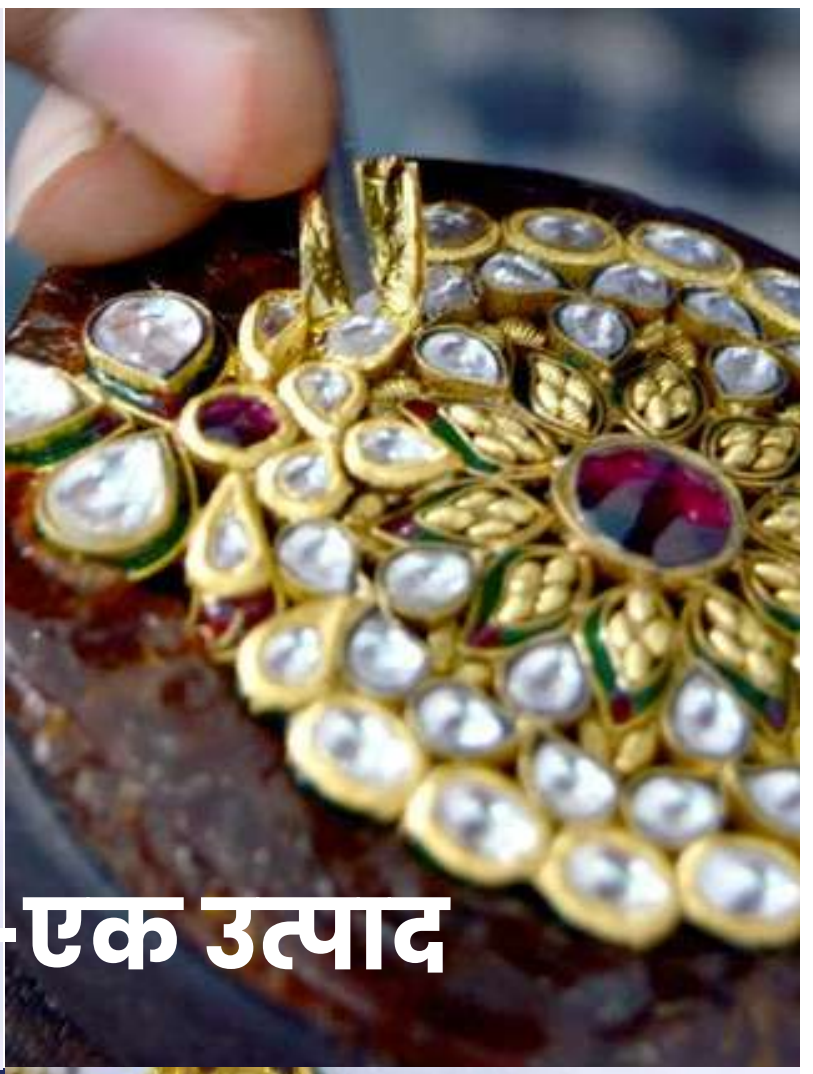

एक जिला-एक उत्पाद

रत्नाभूषण

उद्योग विभाग

एक जिला–एक उत्पाद रत्नाभूषण

एक जिला–एक उत्पाद रत्नाभूषण का परिचय

जयपुर रंगीन जैम्स एण्ड ज्वैलरी तथा कुंदन मीनाकारी के लिए अपनी स्थापना के समय से ही विश्व प्रसिद्ध रहा है। यहां कुंदन मीनाकारी के अन्तर्गत सोने एवं चांदी के आभूषणों पर हाथों से खुदाई कर उसमें रंगीन नगीनों एवं जैम्स स्टोन के पाउडर को भरकर अत्यधिक तापमान पर पकाने के पश्चात् सुन्दर हस्त निर्मित आभूषणों का निर्माण किया जाता है। जैम्स स्टोन से बनी सुन्दर आर्टिफिशियल सिल्वर ज्वैलरी, जड़ाव रत्नों के उत्पादन में जयपुर मुख्य भूमिका अदा करता है। कुदरत सिंह ने सोने, चाँदी व कुन्दन की जड़ाई से जयपुर का नाम मीनाकारी के लिए रोशन किया है। जिसके तहत राज्य के कलाकारों को राष्ट्रीय स्तर एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है। भारत का रत्नाभूषण बाजार लगभग 80 बिलियन US$ हैं जिसमें राज्य का जयपुर जिला सर्वाधिक जैम्स स्टोन ज्वैलरी निर्माण करता है। भारत का विश्व के जैम्स एण्ड ज्वैलरी निर्यात में 5.1 प्रतिशत हिस्सा है। जिसमें जयपुर का योगदान 11269.11 करोड़ रूपये है।

रत्नाभूषण की वर्तमान स्थिति

राजस्थान के ज्वैलरी विनिर्माण में जयपुर का 76 प्रतिशत योगदान हैं जिसमें कुन्दन–मीनाकारी, जड़ाउ ज्वैलरी, सिल्वर–ज्वैलरी एवं रंगीन जैम्स–स्टोन से बनी ज्वैलरी प्रमुख है। जयपुर में SEZ व EPIP Zone सीतापुरा में लगभग 250 बड़ी यूनिट एवं ओल्ड जयपुर सिटी के परकोटा क्षैत्र में लगभग 40,000 कुटीर व सूक्ष्म उद्योगों में लगभग 2,50,000 आर्टिजन कार्यरत है।

निर्यात– राजस्थान में जयपुर से 11269.11 करोड़ (अप्रेल 2023 से मार्च 2024) की जैम्स एण्ड ज्वैलरी का निर्यात किया गया है जो कि राज्य के जैम्स एण्ड ज्वैलरी निर्यात में 90 प्रतिशत से अधिक का योगदान करता है।

केन्द्र सरकार की योजनाएं

केन्द्र सरकार की प्रमुख निर्यात व विनिर्माण संवर्द्धन से सम्बन्धित योजनाएं निम्न हैं:–

कलस्टर डेवलपमेंट (MSE-CDP योजना) के तहत कॉमन फैसलिटी सेन्टर हेतु 90 प्रतिशत अनुदान। प्रधानमंत्री रोजगार सर्जन कार्यक्रम (PMEGP) के तहत विनिर्माण उद्योगो को केपीटल सब्सिडी का (25 से 35 प्रतिशत) प्रावधान। निर्यात संवर्द्धन प्रमोशन हेतु विभिन्न ट्रेडफेयर में MSME DFO व REPC द्वारा स्टॉल रेन्ट का भुगतान। MAI (Market Access Initiative) योजना के तहत वित्तीय सहायता प्रदान करना।

राजस्थान सरकार की योजनाएं

बाजार सहायता योजना के अन्तर्गत आर्टिजन को ट्रेडफेयर का स्टॉल रेन्ट व परिवहन का भुगतान करना। ODOP पॉलिसी 2024 के तहत जैम्स ज्वैलरी हेतु केपीटल सब्सिड़ी का प्रावधान। डॉ भीमराव अम्बेडकर दलित आदिवासी उद्यम प्रोत्साहन योजना (BRUPY) के तहत पूँजीगत ऋण व ब्याज अनुदान। राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना (RIPS) 2024 के तहत विभिन्न वित्तीय व तकनीकी प्रोत्साहन।

रत्नाभूषण को प्रोत्साहित करने हेतु कार्य योजना

- GJEPC (G&j Export Promotion council) and IIGJ (Indian institute of G&J) के साथ मिलकर वर्ष मे 4 स्पेशल ट्रेनिंग कार्यक्रम का आयोजन करवाया जाएगा। उक्त कार्यक्रम में फिलिंग एवं पॉलिसिंग, स्टोन सेटिंग, कटिंग सम्बन्धित स्किल डवलपमेंन्ट, इनोवेशन के प्रशिक्षण के साथ–साथ जोब प्लेसमेन्ट की सुविधा उपलब्ध करवायी जायेगी।
- Job Placement हेतु बड़े उद्यमों व ट्रेडर्स के साथ Tie-up कर Placement करवाना।
- महिला कारीगरों हेतु Special ट्रेनिंग सेशन एवं हाशिये पर स्थित समूहों को सशक्त बनाकर स्थिर रोजगार के अवसर सृजित करना व आर्थिक एवं सामाजिक गतिशीलता को बढाना।
- राजीविका के सहयोग से ग्रामीण क्षेत्रों में स्वयं सहायता समूह (SHG) की लगभग 40 महिलाओं को स्किल ट्रेनिंग की सुविधा उपलब्ध करवायी जायेगी।
- Design Development एवं बाजार की मांग के अनुसार नवीन डिजाइन के विकास हेतु स्पेशल सेशन का आयोजन व विश्व प्रसिद्ध डिजाइनर के साथ में स्पेशल ट्रेनिंग सेशन का आयोजन करना।
- सीतापुरा के प्रमुख रत्नाभूषण उद्योगों के कार्यस्थल का भ्रमण करवाया जाना।

- GJ&PC , IIGJ के साथ Special Skilled Training आयोजित करवाना।
- रूबी एवं सेफायर जैम्स की विश्वभर में अत्यधिक मांग है गुणवतापूर्ण रूबी एवं सेफायर के चमक हेतु ''हीट ट्रीटमेन्ट'' की आवश्यकता पड़ती है जो अत्यधिक खर्चीला व तकनीकी युक्त होता है। अभी तक यह तकनीक राजस्थान मे उपलब्ध नहीं है अतः IIGJ के साथ मिलकर कारीगरों को हीट ट्रीटमेन्ट की सुविधा उपलब्ध करवाना। इसमें IIGJ व पंच–गौरव से 50–50 प्रतिशत की भागीदारी होगी।
- Market Access हेतु Technical Team को हायर कर तकनीकी ज्ञान उपलब्ध करवाना व उन्हें ई–कॉमर्स व अन्य कॉमर्शियल पोर्टल यथा Amazon, Meesho, Flipkart आदि पर रजिस्ट्रेशन कारवाना।
- ट्रेडिंग व विदेशी बाजार की आसान पहुंच व सुविधा हेतु बी–टू–बी Meeting का आयोजन कराना।
- बाजार पहुंच हेतु GJEPC के साथ मिलकर अप्रेल माह में 40–50 देशों के 200–300 खरीदारों के साथ में Buyer and seller meet या बी–टू–बी मीटिंग का आयोजन कराना।
- Export हेतु DGFT (Directorate General of Foreign Trade) व REPC के साथ मिलकर एक्सपोर्ट तक आसान पहुंच का प्रयास– जिसमें IEC सर्टीफिकेट व अन्य दस्तावेज बनाना।
- REPC International Trade Fair (Jodhpur, Jaipur) में पंच–गौरव उत्पाद हेतु अलग से कार्ययोजना व बी–टू–बी मीटिंग का आयोजन करवाना।
- कुन्दन मीनाकारी जयपुर की प्रमुख जैम्स एवं ज्वैलरी की कला है। इस हेतु कुन्दन मीनाकारी के प्रमुख आर्टिजन को टूल–किट वितरण व बाजार सहायता योजना (ट्रेड फेयर में भाग लेने पर) के अतिरिक्त 5 हजार रूपये तक की सहायता प्रदान करना।
- कुन्दन मीनाकारी जयपुर की प्रमुख जैम्स एवं ज्वैलरी की कला है जिसे अभी तक GI Tag नहीं मिला है। उसे GI Tag दिलवाने का प्रयास करना।
- केन्द्र व राज्य सरकार की Cluster Development योजना में जैम्स एवं ज्वैलरी के उद्यमों को जोड़कर उन्हें कॉमन फैसिलिटी सेन्टर की सुविधा से उच्च तकनीकी सुविधा को कम व्यय पर उपलब्ध करवाना।
- Cluster Development हेतु डीपीआर व अन्य लीगल व्यय की सुविधा उपलब्ध करवाना ताकि शीघ्र इस सुविधा का लाभ मिल सके।
- वर्ष में कम से कम 6 जिला स्तरीय एक दिवसीय कार्यशालाओं का आयोजन करवाया जाएगा।
- प्रत्येक माह में एक वेबिनार का आयोजन करवाना।
- FM Radio से प्रचार–प्रसार, JECC, JKK व अन्य जगहों पर आयोजित ज्वैलरी फेयर व Expo में बैनर व स्टॉल लगाना। प्रमुख जैम्स एवं ज्वैलरी के एसोसिएशन व RIICO Office में स्थायी स्टेण्डी बैनर लगाना।

- दीर्घकालीन योजना के तहत जैमबुर्ज (GEMBOURSE) की सुविधा उपलब्ध करवाने के लिए राजस्थान सरकार द्वारा सीतापुरा में जमीन चिन्हित कर ली गई है। आधारभूत संरचना को जल्द ही विकसित करने का कार्य किया जाएगा।
- कुशल शिल्पकारों को प्रोत्साहित करना और उनके कौशल में सुधार करने हेतु समय–समय पर राज्य/ राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय शिल्पकारों के साथ कार्यशाला/सेमिनार/वेबिनार का आयोजन करवाया जाएगा।
- स्थानीय समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित करते हुए रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाना।
- सम्बन्धित उत्पाद के बारे में स्थानीय युवाओं/लोगों को प्रशिक्षण और जानकारी प्रदान की जायेगी।

नोडल अधिकारी– श्री बी आर चौधरी, सहायक आयुक्त, डीआईसीसी जयपुर शहर, 7597798986
उप नोडल अधिकारी– श्रीमती गीता चौधरी, जिला उद्योग एवं वाणिज्य अधिकारी, डीआईसीसी, जयपुर ग्रामीण, 9351234224

एक जिला-एक वनस्पति प्रजाति
लिसोड़ा

वन एवं पर्यावरण विभाग

एक जिला–एक वनस्पति प्रजाति लिसोड़ा

एक जिला एक वनस्पति प्रजाति लिसोड़ा का परिचय

लिसोड़ा को 'रेगिस्तान की चेरी' के नाम से भी जाना जाता है तथा इसके अन्य स्थानीय नाम भी है जैसे–लहसुआ, गून्दा, इत्यादि। इसका वानस्पतिक नाम Cordia myxa है। पिछले कुछ वर्षों से लिसोड़ा की वाणिज्यिक खेती भी की जा रही है। यह बहुउपयोगी फलदार पेड़ है। पुराने समय में राजस्थान तथा गुजरात के क्षेत्रों में पान के स्थान पर लिसोड़ा के पत्ते को भी उपयोग में लेते थे क्योंकि इसका स्वाद भी पान की तरह होता है। लिसोड़ा का पेड़ मध्यम आकार का तथा चौड़ी पत्ती वाला पर्णपाती पेड़ है। लिसोड़ा में फूल मार्च–अप्रेल में आते है तथा मई–जून तक फल पकते है। पौधारोपण के 4–5 साल बाद फल का उत्पादन शुरू हो जाता है। लिसोड़ा के सूखे हुए 1 किलोग्राम बीजों की संख्या 2500–3000 तक हो सकती है। बुवाई के बाद बीज 10–15 दिन में उगते है तथा इसके ताजा बीजों की 50 से 60 प्रतिशत अंकुरण दर होती है। यह आम तौर पर 6 से 9 मीटर की ऊँचाई तक पहुँचता है और इसकी छतरी फैली हुई होती है। लिसोड़ा की पत्तियाँ सरल, वैकल्पिक, अण्डाकार और घनी होती हैं, जिनमें प्रमुख शिराए होती हैं। फूल छोटे, सफेद एवं सुगंधित होते हैं और गुच्छों में दिखाई देते हैं। फल गोल व अंडाकार होता है, पकने पर पीला हो जाता है। जिसमें एक पतली, खाने योग्य परत होती है जो मीठी व रसदार गूदे की बनी होती हैं।

लिसोड़ा का औषधीय उपयोग

भारतीय चेरी का पारम्परिक भारतीय आयुर्वेदिक चिकित्सा में औषधीय उपयोग का एक लंबा इतिहास है। इसके फार पतेल और जड़ों का उपयोग विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जाता है। जिसमें पाचन संबंधी समस्याओं, श्वसन संबंधी बीमारियाँ, बुखार, सूजन और त्वचा संबंधी विकारों का इलाज शामिल है। यह फल एंटीऑक्सीडेंट, विटामिन और खनिजों से भरपूर होता है, जो इसके चिकित्सीय गुणों में योगदान देता है। इसके फल सुपारी के बराबर होते हैं। कच्चा लिसोड़ा का साग और अचार भी बनाया जाता है। पके हुए लिसोड़े मीठे होते हैं तथा इसके अन्दर गोंद की तरह चिकना और मीठा रस होता है, जो शरीर को मोटा बनाता है। लिसोड़ा के पेड़ विभिन्न जानवरों और कीड़ों के लिए छाया, आश्रय और भोजन प्रदान कर पारिस्थितिकी तंत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये मिट्टी के कटाव रोकने में भी मदद करते है।

लिसोड़ा (Cordia myxa) की वर्तमान स्थिति

प्राकृतिक रूप से लिसोड़ा के वृक्ष शुष्क एवं अर्द्धशुष्क जलवायु वाले क्षेत्रों में पाये जाते है। यह राजस्थान के जयपुर, पाली, सिरोही, जोधपुर, उदयपुर, दौसा, भरतपुर, जालौर आदि क्षेत्रों में पाये जाते है। लिसोड़ा (Cordia myxa) एक बहुउपयोगी वृक्ष प्रजाति है, जो औषधीय, खाद्य, कृषि वानिकी, और पर्यावरणीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। जयपुर के ग्रामीण और अर्ध–शहरी क्षेत्रों में कुछ स्थानों पर ये वृक्ष खेतों की मेड़ों, चारागाहों और स्थानीय उद्यानों में देखे जाते हैं। अरावली पर्वतमाला और उसके आस–पास के इलाकों में इस वृक्ष की संभावना अधिक देखी जाती है। शहरीकरण, अवैज्ञानिक कटाई और जागरुकता की कमी के कारण लिसोड़ा वृक्षों की संख्या सीमित होती जा रही है।

लिसोड़ा की उपलब्धता

जयपुर जिले के आमेर, बस्सी और फागी में यह वृक्ष कुछ मात्रा में पाया जाता है। इन क्षेत्रों में स्थानीय किसान एवं ग्रामीण समुदाय लिसोड़ा के फलों का उपयोग अचार बनाने, औषधीय काढा बनाने एवं पशु चारे के रूप में घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु करते है। लिसोड़ा वृक्ष की व्यावसायिक खेती या बड़े स्तर पर रोपण अभी तक विकसित नहीं किया जा सका है। अधिकांश किसान एवं ग्रामीण समुदाय लिसोड़ा के व्यावसायिक लाभों से अनभिज्ञ हैं। अतः शहरी क्षेत्रों में वृक्षारोपण के रूप में लिसोड़ा के पौधों को बढ़ावा देकर, इसके पौधें सड़कों के किनारे एवं सरकारी परिसरों में लगाए जा सकते है।

सरकार की योजनाएं

सरकार द्वारा संचालित योजनाएं TOFR, RFBP, फार्म वन विधा एवं नाबार्ड के अन्तर्गत वन विभाग की नर्सरियों में लिसोड़ा के सीडलिंग तैयार की जाती है।

भविष्य की कार्य योजना

- जिले में स्थान चिन्हित कर विभिन्न प्रकार के पौधे (आंवला व लिसोड़ा) लगाना एवं उनके औषधीय गुणों की पट्टिका लगाकर **अमृता–निसोरा वाटिका** का निर्माण किया जाएगा तथा इसे पर्यटन की दृष्टि से भी विकसित किया जाएगा।
- लिसोड़ा के उत्पाद को जनउपयोगी बनाने हेतु प्रत्येक ब्लॉक स्तर पर स्थानीय युवाओं/स्वयं सहायता समूह/महिलाओं को कार्यशाला के माध्यम से प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा।
- वन विभाग की प्रत्येक रेंज क्षेत्र में हर महीने कम से कम पाँच ग्राम पंचायतों में लिसोड़ा के वृक्षारोपण एवं उसके उत्पादों के संबंध में जागरूकता अभियान चलाया जाएगा।
- पंचायत समिति एवं वन विभाग द्वारा संयुक्त रूप से प्रत्येक ग्राम पंचायत में 250–250 पौधे लगाने का पायलट वृक्षारोपण एवं पौधे वितरण कार्यक्रम चलाया जाएगा। सभी विभागों से समन्वय स्थापित कर सड़क किनारे, सरकारी स्कूलों, आंगनबाड़ी केंद्रों, सरकारी भवनों और

पंचायत भवनों की रिक्त जगहों पर लगाये जाएगें। इस प्रकार कुल 50000 लिसोड़ा के पौधों का वितरण एवं उनका पोषण सुनिश्चित किया जाएगा।

- लिसोड़ा आधारित मिश्रित वानिकी मॉडल (Agroforestry) को किसानों में लोकप्रिय बनाना।
- वन विभाग की नर्सरियों का तकनीकी उन्नयन कर लिसोड़ा के सीडलिंग तैयार करने बीजारोपण तकनीक के अलावा रूट ट्रेनर तकनीक का इस्तेमाल करना ताकि उच्च कोटि एवं अत्यधिक मात्रा में पौधे तैयार की जा सके।
- स्थानीय लोगों को लिसोड़ा आधारित उत्पादों की व्यवसायिक संभावनाओं से अवगत करवाकर महिला एवं ग्रामीण युवाओं को लिसोड़ा आधारित कुटीर उद्योग (अचार, औषधीय गुण, पत्तियों से जैविक खाद) लगाने के लिए प्रोत्साहित करने के साथ ही प्रशिक्षित किया जाएगा।
- ग्राम पंचायत स्तर, ब्लॉक स्तर, जिला स्तर पर किसानों की बैठक, प्रदर्शनी लगाना, ग्राम सभाओं के माध्यम से, विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में व्याख्यान के माध्यम से लिसोड़ा का प्रचार–प्रसार करना।
- ग्राम पंचायत स्तर/ब्लॉक स्तर पर महिला एवं स्वयं सहायता समूहों को मजबूती प्रदान करने के लिए प्रशिक्षण, ऋण एवं आवश्यक सामग्री उपलब्ध करवाई जायेगी। जिससे उनकी लिसोड़ा उत्पादन एवं प्रसंस्करण में भागीदारी सुनिश्चित की जा सके।
- जिले के कुछ क्षेत्रों को पायलट रूप में चुन कर सर्वप्रथम विकसित किया जाएगा और अन्य क्षेत्रों को उनका अनुसरण करने हेतु प्रोत्साहित किया जाएगा।
- लिसोड़ा के पौधारोपण, उपयोगिता एवं अन्य जानकारी से आमजन को वेबिनार/सेमिनार के माध्यम से अवगत करवाया जाएगा।
- लिसोड़ा लगाने वाले किसानों को प्रोत्साहन राशि या सब्सिडी प्रदान करने के लिए उद्योग विभाग से समन्वय स्थापित करने की योजना बनाई जाएगी। सफल हितधारकों की सफल स्टोरी का व्यापक प्रचार–प्रसार किया जाएगा।
- लिसोड़ा के लिए उन्नत जैविक खाद, कीटनाशक की जानकारी उपलब्ध करवाने के साथ ही ड्रिप सिंचाई योजना के तहत किसानों को जल बचाने की जानकारी दी जायेगी।
- ग्राम पंचायत एवं ब्लॉक के मध्य लिसोड़ा को प्रोत्साहित करने के लिए स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने के उद्देश्य से सबसे अधिक लिसोड़ा पौधे लगाने वाले गाँव को 'लिसोड़ा ग्राम पुरस्कार' से पुरस्कृत किया जाएगा तथा नवाचार करने वाले किसानों को 'बेस्ट फार्मर अवार्ड' से पुरस्कृत किया जाएगा।
- स्थानीय समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित करते हुए ग्राम स्तर पर जागरुकता अभियान चलाकर किसानों और ग्रामीणों को लसोड़ा के आर्थिक व पारिस्थितिकीय लाभों के बारे में जागरूक करना।

- स्वयं सहायता समूह (SHG) के माध्यम से लिसोड़ा की खेती व विपणन को बढ़ावा देना।
- स्थानीय किसानों व स्वयं सहायता समूहों को लिसोड़ा की खेती, सिंचाई, रोग प्रबंधन की तकनीकों पर प्रशिक्षण देना। नर्सरी निर्माण, रोपण, देखरेख और फसल कटाई में स्थानीय श्रमिकों को रोजगार उपलब्ध करवाना।
- लिसोड़ा के उत्पादों (फल, अचार, पाउडर आदि) को स्थानीय हाट–बाजारों में बेचने हेतु समन्वय स्थापित करना।
- बड़ी कंपनियों से CSR (Corporate Social Responsibility) फंडिंग प्राप्त कर लिसोड़ा आधारित स्टार्टअप और उद्यमों को सहयोग प्रदान करवाना।
- वन उत्पादों पर कार्यरत NGOs के साथ साझेदारी कर लिसोड़ा उत्पादों के मूल्य संवर्धन (Value Addition) की योजना बनाना।
- उद्योग संघों का सहयोग फूड प्रोसेसिंग कंपनियों का सहयोग लेकर लिसोड़ा उत्पादों को औद्योगिक स्तर पर विपणन के लिए तैयार करना।
- लिसोड़ा की व्यावसायिक खेती को बढ़ावा देने के लिए कलस्टर आधारित खेती मॉडल अपनाना।
- लिसोड़ा आधारित स्टार्टअप शुरु करने वाले युवाओं को कृषि इनक्यूबेशन केंद्रों से जोड़ना।
- MSME योजनाओं के तहत लिसोड़ा प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना के लिए सब्सिडी और ऋण उपलब्ध करवाने से संबंधित योजनाओं के बारे में जानकारी देना।
- स्थानीय युवाओं को लिसोड़ा अचार आयुर्वेदिक औषधि निर्माण जैसे क्षेत्रों में उद्यम स्थापित करने हेतु मार्गदर्शन देना।
- लिसोड़ा महोत्सव आयोजित कर स्थानीय लोगो/स्वयं सहायता समूहों को अपने उत्पादों को प्रदर्शित और विपणन करने का अवसर प्रदान करना।

वन विभाग की नर्सरियों से पौधों की मांग ऑनलाईन प्रस्तुत करने के लिये संस्था/ व्यक्तिगत लाभार्थी द्वारा FMDSS Portal के प्रयोग की प्रक्रिया निम्नानुसार हैः–

FMDSS Portal पर निम्न URL टाईप करेंः https://aaranyak.forest.rajasthan.gov.in/ or https://fmdss.forest.rajasthan.gov.in/Forest Nursery पर क्लिक करें। जिला, नर्सरी एवं प्रजाति का चयन करें। नर्सरी वार एवं प्रजाति वार पौधों की उपलब्धता के लिये सर्च बटन पर क्लिक करें। उपलब्धता अनुसार पौधों की संख्या अंकित करें तथा Cart पर मात्रा अंकित करने के लिये Add का बटन दबायें। पौधों की संख्या आयु अनुसार स्क्रीन पर जमा करवाए जाने वाली राशि प्रदर्शित होगी। मांगकर्ता की श्रेणी यथा व्यक्तिगत लाभार्थी/संस्था/विभाग का चयन करने के लिये Checkout का बटन दबाये। तत्पश्चात् भुगतान करने के लिये SSO Id के माध्यम से लॉगिन करे। भुगतान विधि का चयन कर ऑनलाईन रसीद प्राप्त होगी। असुविधा होने पर समाधान हेतु helpdesk.fmdss@rajasthan.gov.in पर ईमेल पर संपर्क किया जा सकता है।

नोडल अधिकारी– श्री सुशील सैनी, उपवन संरक्षक, वन एवं पर्यावरण विभाग, 7792852381

एक जिला-एक उपज
आंवला

कृषि एवं उद्यानिकी विभाग

एक जिला–एक उपज आंवला

एक जिला–एक उपज आंवला का परिचय

आंवले का वानस्पतिक नाम फिलैंथस एम्बलिका (Phyllanthus Emblica) है। आंवला को इण्डियन गूजबेरी के नाम से भी जाना जाता है। आंवला यूफोरबिएसी परिवार का पौधा है। आंवले में पत्तियां फरवरी के मध्य में छोटी शाखाओं के साथ गिरना आरम्भ करती है और मार्च के मध्य तक वृक्ष पूर्णरूपेण पत्ति रहित हो जाता है। इनके गिरने के साथ ही नई छोटी शाखाएं निकलना एवं नई कलिकाएं निकलना आरम्भ हो जाती है। इन पर मार्च–अप्रेल में फूल आते है। यद्यपि शाखाओं की वृद्धि जून–जुलाई में सबसे अधिक होती है। आंवला उपोष्ण जलवायु का फल है इस पर गर्मियों में लू व गर्म हवाओं का कुप्रभाव नही पड़ता है। इस समय इसे पानी की भी कम आवश्यकता रहती है परन्तु यह नम जलवायु मे भी अच्छी तरह फलता है। आरम्भिक वर्षो में इसकी पाले से सुरक्षा करनी चाहिये परन्तु कुछ वर्ष पश्चात आंवला पाला व शीत लहर को भी सहन करने की शक्ति रखता है। आंवले के औषधीय गुणों, अच्छी पैदावार, कम पानी में पैदावार, किसानों के लिए स्थाई आमदनी का साधन होने के कारण एवं जिले की जलवायु के अनुकूल होने के कारण आंवले को जयपुर के लिए पंच–गौरव में रखा गया है। आंवले की खेती के लिये गहरी तथा उपजाऊ दोमट्ट से चिकनी मिट्टी जिसमें जल निकास का अच्छा प्रबंध हो सर्वश्रेष्ठ रहती है। यह काफी हद तक क्षारीयता को सहन करने की शक्ति रखता है।

आंवले के पौधे खेत में लगाने से पहले मई माह में भूमि की उर्वरकता अनुसार 6 मीटर की दूरी पर 1x1 आकार के गढ्ढे खोदकर उन्हे खुला छोड़ देना चाहिये। जून माह में गढ्ढों में खाद, दवाई एवं जिप्सम मिलाकर 6 से 8 इंच ऊंचाई तक गढ्ढों की भराई की जानी चाहिये। वर्षा आते ही जुलाई–अगस्त माह में इन गढ्ढों में पौधों की रोपाई कर देनी चाहिये।

औषधीय गुण

आंवले में विटामिन सी, कैल्शियम, फ़ॉस्फ़ोरस, आयरन, कैरोटीन, कार्बोहाइड्रेट, थायमिन, राइबोफ़्लेविन जैसे कई तत्व होते है। आंवले में एंटीऑक्सीडेंट गुण होते है ये एंटीऑक्सीडेंट्स शरीर से नुकसानदेह पदार्थों को बाहर निकालते है। आंवले में मौजूद फ़ाइबर पाचन क्रिया को बेहतर बनाता है। आंवले में मौजूद विटामिन सी इम्यूनिटी बढ़ाता है। आंवले में मौजूद कैल्शियम हड्डियों को मज़बूत बनाता है। आंवले में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट गुण आंखों की रोशनी बढ़ाने में मदद करते है। आंवले में मौजूद खास तत्व इंसुलिन बनने की प्रक्रिया को बढ़ाते हैं, जिससे डायबिटीज़ के लक्षण कम होते है। आंवला ब्लड शुगर को कंट्रोल करने में मदद करता है। आंवले का जूस, मुरब्बा, चटनी, आंवला कैंडी, आंवला लड्डू, आंवला पाउडर, तथा आंवला अचार के रूप में उपयोग किया जा सकता है इसे कच्चा भी खाया जा सकता है।

आंवला की वर्तमान स्थिति

जयपुर जिले में आंवले का क्षेत्रफल 850 हैक्टेयर है। जयपुर जिले के लिए आंवले की उपयुक्त किस्में चक्कैया, एनए 7, कृष्णा, कंचन, नरेन्द्र आंवला, गुजरात आनन्द 1 एवं गुजरात आनन्द 2 है। आंवले का प्रवर्धन वानस्पतिक विधि द्वारा नर्सरी में पौध तैयार कर 1 हैक्टेयर में 278 पौधों की रोपाई की जाती है। एक पूर्ण विकसित आंवले का पेड़ 150 से 200 किलो फल देता है। पैदावार पौधे की किस्म तथा भूमि की उर्वरा शक्ति पर निर्भर करता है। जयपुर जिले में ज्यादातर आंवलें की खेती चौमूँ, गोविन्दगढ, आमेर, जमवारामगढ, आंधी, बस्सी व शाहपुरा में की जाती है। जयपुर जिले में मुख्यतः जमवारामगढ व आंधी में 284 हैक्टर में रामपुरावास रामगढ, इन्द्रगढ, नांगल तुलसीदास, जमवारामगढ, आंधी, विरासना में आंवला की खेती होती है। चौमूं क्षेत्र के 204 हैक्टर में मोरिजा, नांगल भरडा, कुशलपुरा, फतेहपुरा, सामोद एवं आलीसर में आंवले की खेती होती है।

भविष्य की कार्ययोजना

- प्रत्येक ब्लॉक से 200 महिलाओं (SHG, कृषक महिलाओं एवं युवा कृषकों) का क्षमता संवर्धन हेतु चयन किया जाकर कुल 19 ब्लॉकों से 3800 महिलाओं का चयन किया जाएगा। घरेलू स्तर पर आंवला प्रोसेसिंग/प्रसंस्करण इकाईयां स्थापित करने के लिए महिलाओं को आंवला प्रोसेसिंग का प्रायोगिक दो दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण कृषि विज्ञान केन्द्र (KVK) एवं इन्टरनेशनल होर्टिकल्चर इनोवेशन एण्ड ट्रेनिंग सेन्टर (IHITC) के माध्यम से दिया जाएगा। प्रति बैच 50 प्रतिभागियों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस प्रकार कुल 76 बैच को प्रशिक्षण दिया जाना प्रस्तावित है।
- आंवला उत्पादक किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य दिलवाने हेतु जिले में 2 आंवला प्रोसेसिंग इकाई स्थापित करवाया जाना प्रस्तावित है। कालख एग्रो नवफेड फार्मर प्रड्यूसर कम्पनी लि0, कालख, तह0 जोबनेर में वृहद आंवला प्रोसेसिंग इकाई स्थापित की जायेगी। उक्त राशि में से 35 प्रतिशत अनुदान राशि NHM योजना से तथा 35 प्रतिशत अतिरिक्त अनुदान राशि पंच–गौरव से देय होगी। कृषि विज्ञान केन्द्र टांकरडा, चौमूँ पर आंवला प्रोसेसिंग इकाई स्थापित किया जाना प्रस्तावित है।
- जिला स्तर पर आंवला उत्पादक कृषकों एवं क्रेताओं का सम्मेलन, पंच–गौरव प्रदर्शनी एवं प्रतियोगिता का आयोजन करवाया जाना प्रस्तावित है। इस कार्यक्रम में 1000 आंवला उत्पादक कृषकों एवं क्रेताओं को आमंत्रित किया जाएगा।
- 50 हैक्टेयर में नवीन बगीचे स्थापना मय ड्रिप सिंचाई प्रणाली स्थापित करना। प्रति हैक्टेयर 4 वर्ष बाद आंवले में 30–40 कि.ग्रा. प्रति पौधा आंवला फल प्राप्त होता है तथा 8 से 10 वर्ष

बाद 150 से 200 कि.ग्रा. आंवला फल प्रति पौधा प्राप्त होता है। चूंकि आंवला प्रति हैक्टेयर 278 पौधे रोपित किये जाते है। इस प्रकार 4 वर्ष बाद 486 मैट्रिक टन आंवला नवीन बगीचों से प्राप्त होगा जो आंवले की पूर्ण विकसित होने पर 8–10 वर्ष बाद संभावित 2085 मैट्रिक टन आंवले की पैदावार होगी।

- राज्य सरकार द्वारा राष्ट्रीय बागवानी मिशन योजनान्तर्गत इकाई लागत का 75% अनुदान देय है। 1 कृषक को न्यूनतम 0.4 हैक्टेयर से 4.0 हैक्टेयर के लिए अनुदान देय है। इकाई लागत राशि रू0 40008/– का 75% राशि रू0 30006/– अनुदान देय है।

आंवला मुरब्बा

आंवला केन्डी

आंवला अचार

आंवला ज्यूस

- जयपुर जिले में प्रत्येक ग्राम पंचायत में कृषि विभाग के कृषि पर्यवेक्षक कार्यरत है। कृषि पर्यवेक्षकों के माध्यम से ग्राम पंचायतों में होने वाली ग्राम सभाओं/किसान संगोष्ठि/कार्यक्रमों में आंवला के बगीचों की स्थापना, आंवला फल के औषधीय गुणों तथा आंवला बगीचों से होने वाली आमदनी के बारे में स्थानीय लोगों को जागरूक किया जाएगा।

- कृषि विभाग/उद्यान विभाग के होने वाले समस्त प्रशिक्षणों में आंवला फसल की उन्नत कृषि विधियों तथा आंवले के औषधीय गुणों के सम्बंध में कृषकों को प्रशिक्षित किया जाएगा।
- विभाग की आत्मा योजना जिला स्तर पर प्रस्तावित कृषि मेले में आंवला फसल की उन्नत कृषि विधियों तथा आंवले के औषधीय गुणों के सम्बंध में कृषकों को प्रशिक्षित किया जाएगा।
- राज्य सरकार द्वारा जयपुर जिले में राजहंस नर्सरी, नला गार्डन एवं ढिंढोल बस्सी में आंवला की उन्नत नर्सरी तैयार की जाती है। आंवला फल एक कोर्स पोलीनेटेड होने के कारण केवल वनस्पतिक विधि से तैयार पौधे ही True To Type होते है। अतः कृषकों का जयपुर जिले की जलवायु के अनुसार यहां के लिए उपयुक्त किस्में यथा– चक्कैया, एनए 7, कृष्णा, कंचन, नरेन्द्र आंवला, गुजरात आनन्द 1 एवं गुजरात आनन्द 2 का ही वितरण किया जाता है।
- राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड (NHB) से एक्रीडेटेड मान्यता प्राप्त नर्सरी कृष्णा नर्सरी, म्हार कलां, गणेश नर्सरी, आसलपुर, जोबनेर एवं श्रीगोविन्दम नर्सरी, ढोढसर में उन्नत आंवला की कलिकायन विधि द्वारा पौध तैयार की जाती है। इस प्रकार इस जिले में आंवले के गुणवत्तायुक्त पौधों की कृषकों की मांग अनुसार आपूर्ति सुनिश्चित की जावेगी।
- आंवला फसल के स्वस्थ गुणवत्तायुक्त उत्पादन हेतु विभाग में वर्तमान में संचालित फर्टीगेशन योजना के माध्यम से कृषकों की मांग अनुसार/विभागीय दिशा–निर्देशानुसार सूक्ष्म पौषक तत्वों की आपुर्ति हेतु प्राथमिकता से उपलब्ध करवाया जाएगा। सूक्ष्म सिंचाई योजना के कम्पोनेन्ट फर्टीगेशन अन्तर्गत उद्यानिकी फसलों मे सूक्ष्म पौषक तत्वों के आपूर्ति हेतु कृषकों को इकाई लागत का 75 प्रतिशत अनुदान देय है।
- विभागीय सेमीनार/प्रशिक्षणो/कृषि मेलें में प्रश्नोत्तरी/प्रदर्शनी के माध्यम से किसानों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना वर्तमान मे भी उत्पन्न की जा रही है। आंवला को प्रोत्साहित करने हेतु विशेष ध्यान दिया जाएगा।
- आंवला बगीचा स्थापना से स्थानीय लोगों को सीधा रोजगार उपलब्ध होता है साथ ही आंवला प्रसंस्करण इकाई स्थापना से प्रसंस्करण की इकाई में तथा उत्पादों के विक्रय में स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।
- आंवले के औषधीय गुणों का अधिक से अधिक प्रचार–प्रसार किया जाएगा जिससे आमजन में आंवले उत्पादों के उत्पादन व उपभोग बढाने में मदद मिलेगी जिससे आंवला उत्पादों के विक्रय में आसानी होगी।
- राजकीय विद्यालयों में मिड–डे मिल में आंवला मुरब्बा व आंवला कैंडी को राज्य सरकार के स्तर से सम्मिलित करवाये जाने से आंवला के उत्पादों को अच्छा बाजार उपलब्ध होगा तथा राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विधार्थियों में मालन्यूट्रिशन की समस्या भी नही रहेगी।

नोडल अधिकारी

नोडल अधिकारी– श्री हरलाल सिंह बिजारनियाँ, उप निदेशक, उद्यान विभाग, 9413867604

उप नोडल अधिकारी– श्री रामसिंह शेखावत, सहायक निदेशक, उद्यान विभाग, 7976972804

एक जिला-एक पर्यटन स्थल
आमेर दुर्ग

पर्यटन विभाग

एक जिला–एक पर्यटन स्थल आमेर दुर्ग

एक जिला–एक पर्यटन स्थल आमेर दुर्ग का परिचय

कछवाहों की पुरानी राजधानी आम्बेर का दुर्ग जयपुर से लगभग 11 कि.मी. उत्तर में एक पर्वतीय ढलान पर अवस्थित है। साहित्यिक ग्रन्थों और शिलालेखों में इसे आम्बेर, अम्बिकापुर, अम्बर, अम्बरीश, अम्बावती इत्यादि विविध नामों से अभिहित किया गया है तथा अम्बिकेश्वर महादेव या अम्बामाता के नाम से इसके नामकरण की सम्भावना व्यक्त की गयी है। इस दुर्ग में महलों को ही परकोटे का रूप दिया गया है। ये महल पर्वतीय ढलान पर बने हुए हैं। यह भव्य दुर्ग है। इस दुर्ग के नीचे मावठा तालाब व दिलाराम बाग इसकी शोभा को द्विगुणित करते हैं। मावठा तालाब में ही सुंदर केसर क्यारियाँ हैं जिन्हें मोहनबाड़ी भी कहते हैं भी दर्शनीय है। इस किले में अनेक महल हैं लेकिन शीशमहल उन सबसे भव्य है। इसकी छत व दीवारों पर काँच की जड़ाई का सुंदर काम हुआ हैं इसमें मोमबत्ती जलाते ही व्यक्ति के सैंकडों प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ते हैं। यश मंदिर, सुहाग मंदिर, शिला देवी मंदिर, मानसिंह प्रथम द्वारा स्थापित आमेर की कुलदेवी शिलामाता (महिर्षमर्दिनी) की बंगाल से लाई गई प्रतिमा जिसे मिर्जा मानसिंह ढाका के शासक केदारराय को विजित करके यहां लाए। इसे पूर्वी बंगाल में जसोर नामक स्थान से आमेर लाये थे जो बहुत सजीव व आकर्षक है। आमेर गांव में स्थित जगतशिरोमणि मंदिर अपनी भव्य नक्काशी व तोरण के लिए विख्यात है। इसमें चित्तौड़ से लाई गई कृष्ण की काली प्रतिमा दर्शनीय हैं। नृसिंह मंदिर में विद्यमान सफेद संगमरमरी हिंडोला भी बेहद भव्य और आकर्षक है। बहादुर शाह प्रथम ने सवाई जयसिंह के काल में आमेर पर कब्जा करके इसका नाम मोमनाबाद कर दिया था। मारवाड़ के अजीत, मेवाड़ का अमरसिंह व जयपुर की संयुक्त सेना ने किले को मुक्त कराया। यूनेस्को ने 21 जून, 2013 को कम्बोडिया की राजधानी नामपेन्ह में आयोजित बैठक में राजस्थान के 6 किलों को विश्व विरासत सूची में शामिल करने की घोषणा की इसमें आमेर दुर्ग भी शामिल है। आमेर महलों पर मंत्रमुग्ध होते हुए विशप हार्बर ने लिखा है कि अलहम्रा के बारे में सुना तथा केमोलिन के बारे में जो पढा उससे भी बेहतर है यह महल। आमेर दुर्ग का निर्माण राजा भारमल ने प्रारम्भ कराया, लेकिन इसे राजा मानसिंह द्वारा भव्यता प्रदान की गई। आमेर दुर्ग का गणेश पोल द्वार विश्व प्रसिद्ध दरवाजा है। यह 50 फीट ऊँचा व 50 फीट चौड़ा है।

आमेर दुर्ग की वर्तमान स्थिति

वर्तमान समय में आमेर दुर्ग पर्यटकों के अवलोकनार्थ प्रातः 08:00 बजे से रात्रि 08:00 बजे तक खुला रखा जाता है। आमेर महल में पर्यटकों के आकर्षण एवं मनोरंजन हेतु प्रतिदिन हाथी सवारी का संचालन किया जाता है तथा पर्यटकों को महल पहुंचाने के सुविधार्थ बेट्री चलित वाहन का संचालन किया जा रहा है। पर्यटकों के खान–पान सुविधार्थ रामबाग, दलारामबाग एवं जलेब चौक में फूड कियोस्क, कैफे कॉफी–डे एवं 1135 नाम का रेस्टोरेन्ट स्थापित किया गया है साथ ही पर्यटकों के विश्राम हेतु रामबाग एवं दलारामबाग के बगीचों को सुसज्जित किया गया है एवं साफ–सफाई की ओर पूर्ण रूप से ध्यान केन्द्रित किया जाता है, जिससे पर्यटकों को साफ–सफाई से संबंधित समस्या का सामना ना करना पड़े। पर्यटकों हेतु पीने के पानी एवं शौच की सुविधार्थ महल के अनेक स्थानों पर वाटर कूलर मय आर.ओ. एवं टॉयलेट्स स्थापित है। पर्यटकों के आकर्षण हेतु आमेर महल में अनेक गतिविधियां संचालित है, जिससे पर्यटक इनकी ओर आकर्षित होकर इनका लुत्फ उठाते है। इनमें मुख्यतः हाथी सवारी एवं लाइट एण्ड साउण्ड शो है।

देशी–विदेशी पर्यटकों की संख्या

वर्ष	भारतीय	विदेशी	कुल
2019-20	1488474	373618	1862092
2020-21	469518	829	470347
2021-22	989312	7111	996423
2022-23	1567989	134518	1702507
2023-24	1840765	275229	2115994

उद्योग विभाग द्वारा निर्माणाधीन प्रगतिरत हाट बाजार के प्रोजेक्ट में पहले से ही आमेर दुर्ग को विकसित करने की कार्ययोजना पर कार्य किया जा रहा है।

केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के अन्तर्गत आमेर महल एवं इसके आस–पास के क्षेत्र के लिये Development of ICONIC Amber and Surrounding Area, Jaipur कार्य के लिये पर्यटन विभाग द्वारा SASCI योजना के तहत् सलाहकार की नियुक्ति कर दी गई है एवं डी.पी.आर. बनाने की कार्यवाही की जा रही है। डी.पी.आर. प्राप्त होने के पश्चात् निविदा प्राप्त कर कार्य शुरू करवाये जायेंगे।

परिवर्तित बजट घोषणा 2024–25 दिनांक 10.07.2024 के द्वारा आमेर–जयगढ़–नाहरगढ़ किला–जयपुर में रोप–वे सुविधा उपलब्ध कराने के लिए डी.पी.आर. बनायी जाकर कार्य हाथ में लिए जाने प्रस्तावित है।

उक्त कार्य NHLML (National highway authority of india - NHAI) द्वारा मै. आर्वी सोसिएटस् (Aarvee Associates) हैदराबाद को अधिकृत किया गया है एवं उनके द्वारा साइट

विजिट एवं सर्वे (Reconnaissance survey) किया जा चुका है। उनके द्वारा Primary traffic survey की अनुमति विभाग से मांगी गई थी। दिनांक 31.08.2024 से 01.09.2024 को मै. आर्वी एसोसिएटस् (Aarvee Associates) हैदराबाद द्वारा आमेर–जयगढ़–नाहरगढ़ किला–जयपुर का Primary traffic survey किया जा चुका है।

भविष्य की कार्ययोजना

- विगत 25 वर्ष में आमेर दुर्ग का रिनोवेशन कार्य नहीं हुआ है अतः इसका रिनोवेशन करवाया जाना प्रस्तावित है।
- वित्त मंत्रालय, भारत सरकार एवं पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार के दिशा–निदेशों के क्रम में Scheme for Special Assistance to State for Capital Investment (SASCI) के अन्तर्गत माननीय उप मुख्यमंत्री (पर्यटन) महोदया द्वारा निम्न प्रोजेक्टस् का अनुमोदन किया गया हैं–

  Iconic Tourism Development at Amber-Nahargarh Surrounding Area

  उक्त कार्यों की विस्तृत प्रोजेक्ट रिपोर्ट पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार को विभागीय पत्र दिनांक 15.10.24 के द्वारा प्रेषित। उक्त कार्यों के लिए राजस्थान पर्यटन विकास निगम द्वारा M/s Foreinfra Private Limited को कंसलटेंट नियुक्त किया गया है। विभागीय पत्र दिनांक 06.12.24 के द्वारा प्रबंध निदेशक, राजस्थान पर्यटन विकास निगम को उक्त प्रोजेक्टों में नियुक्त कंसलटेंट M/s Foreinfra Private Limited के साथ अनुबंध की कार्यवाही निष्पादित किए जाने के निर्देश जारी किए गए। Wailed City, Jaipur के कार्यों हेतु सार्वजनिक निर्माण विभाग, Amber-Nahargarh Surrounding area के कार्यों हेतु आमेर विकास प्राधिकरण तथा जल महल के कार्यों हेतु राजस्थान पर्यटन विकास निगम कार्यकारी एजेंसी चयनित।

- वित्त मंत्रालय, भारत सरकार की स्वीकृति दिनांक 26.11.24 के द्वारा निम्न 2 प्रोजेक्टस् की स्वीकृति जारी कर दी है–

Sn	Project Name	Amount Approved (In Crore)
1	Development of Iconic Amber-Nahargarh and Surrounding Area, Jaipur	49.31
2	Iconic Tourism Development at Jal Mahal, Jaipur	96.61
	Total	145.92

वित्त मंत्रालय, भारत सरकार की स्वीकृति दिनांक 26.11.24 के द्वारा राशि रूपये 145.92 करोड़ के 2 प्रोजेक्टस् स्वीकृत कर प्रथम किश्त (प्रोजेक्ट की कुल स्वीकृत राशि का 66 प्रतिशत) राशि रूपये 9630.72 लाख वित्त विभाग, राजस्थान सरकार को प्राप्त हो चुकी है।

- आमेर में साफ–सफाई की ओर पूर्ण रूप से ध्यान केन्द्रित किया जाता है, जिससे पर्यटकों को साफ–सफाई से संबंधित समस्या का सामना ना करना पड़े। पर्यटकों हेतु पीने के पानी एवं शौच की सुविधार्थ महल के अनेक स्थानों पर वाटर कूलर मय आर. ओ. एवं टॉयलेट्स स्थापित किये गये है तथा जगह चिन्हित कर अन्य व्यवस्था करवाई जाना प्रस्तावित है।

- Virtual Reality Tours को बढावा देना, Sunset Point, Couple PhotoShoot, Wedding Photo Sites को विकसित करना, Royal Family Guest Dinner, Royal Wedding को बढावा देना, मावठा झील को जलमहल के तर्ज पर विकसित करना, स्थानीय त्यौहारों/मेलों आदि का आयोजन करवाना, Helly (Helicopter)Tourism/ Drone Tourism को बढावा देने का कार्य प्रस्तावित है।
- स्थानीय संस्कृति एवं कला को बढावा देने के लिए राजस्थान दिवस एवं विश्व पर्यटन दिवस जैसे अवसरों पर विभाग द्वारा पर्यटको का मालाओं से स्वागत, सांस्कृतिक प्रस्तुति, हेरिटेज वॉक जैसे कार्यक्रम करवाये जाते है अतः अन्य दिवसों में भी यह कार्यक्रम करवाया जाना प्रस्तावित है।

- स्थानीय लोगों को रोजगार उपलब्ध करवाने के लिए विभाग द्वारा वर्ष 2003 में स्थानीय स्तर के 825 लोगों, वर्ष 2007 में स्थानीय स्तर के 771 लोगों एवं वर्ष 2022 में राज्य स्तरीय 385 व स्थानीय स्तर के 1500 लोगों को परीक्षा व परीक्षण के पश्चात गाईड परिचय पत्र जारी किये गये है तथा ओर अधिक स्थानीय लोगों को रोजगार उपलब्ध करवाने के लिए कार्य किया जाएगा।
- सतत् पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए आमेर में हेरिटेज वॉक जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। साथ ही विभाग द्वारा पर्यटन अभियान चलाकर होटल मैनेजमेन्ट के छात्रों को प्राकृतिक स्थल के संरक्षण हेतु जागरूक करने के उद्देश्य से आमेर में नेचर ट्रैक को बढ़ावा देने हेतु अनुभवी गाईडों द्वारा कार्य किया जा रहा है।

- पर्यटकों के आकर्षण हेतु विशेष अवसरों पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों, नुक्कड़ नाटक आदि का आयोजन करवाया जाता है। किन्तु पर्यटकों के और अधिक आकर्षण के लिए प्रत्येक माह में एक या दो एवं प्रत्येक सप्ताह में एक बार सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करवाया जाना प्रस्तावित है।
- पर्यटन स्थल पर पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए टूर पैकेज, प्राकृतिक भ्रमण, साहसिक खेलों का आयोजन करवाया जाएगा।
- गैर सरकारी संगठनों, सीएसआर फाउण्डेशन, उघोग संघो आदि का सहयोग लेने हेतु कार्ययोजना बनाकर कार्य किया जाएगा।

नोडल अधिकारी

नोडल अधिकारी– श्री उपेन्द्र सिंह शेखावत, उप निदेशक, पर्यटन 9414152862

उप नोडल अधिकारी– श्री बाबूलाल मीणा, पर्यटक अधिकारी, जयपुर 9529163816

एक जिला-एक खेल
कबड्डी

खेल एवं युवा मामलात विभाग

एक जिला–एक खेल कबड्डी

एक जिला–एक खेल कबड्डी का परिचय

कबड्डी एक लोकप्रिय टीम खेल है जिसमें कौशल और शक्ति की आवश्यकता होती है। यह एक सरल और सस्ता खेल है जिसे खेलने के लिए थोड़ी जगह एवं कम महंगें उपकरणों की आवश्यकता होती है। विकासशील देशों में यह खेल काफी लोकप्रिय है। महान हिन्दु पौराणिक कथाओं में भी इसका वर्णन मिलता है।

कबड्डी मूल रूप से एक संघर्षपूर्ण खेल है जिसमें प्रत्येक पक्ष में सात खिलाड़ी होते हैं। 5 मिनट के ब्रेक (20–5–20) के साथ 40 मिनट की अवधि के लिए खेला जाता है। खेल का मुख्य विचार प्रतिद्वंदी के कोर्ट में रेड करके और एक ही सांस में पकड़े बिना यथासंभव अधिक से अधिक डिफेंस खिलाड़ियों को छूकर अंक अर्जित करना है।

इस खेल की उत्पत्ति प्रागैतिहासिक काल से हुई है, जिसे विभिन्न रूपों में खेला जाता है। आधुनिक कबड्डी खेल 1930 से पूरे भारत और दक्षिण एशिया के कुछ हिस्सों में खेला जाने लगा। भारत के स्वदेशी खेल के रूप में कबड्डी के नियमों का पहला ज्ञात ढाँचा महाराष्ट्र में वर्ष 1921 में संजीवनी और जैमिनी के संयुक्त रूप में कबड्डी प्रतियोगिताओं के लिए तैयार किया गया था। इसके बाद वर्ष 1923 में एक समिति का गठन किया गया जिसने 1921 में बनाए गए नियमों में संशोधन किया। संशोधित नियमों को 1923 में आयोजित अखिल भारतीय कबड्डी टूर्नामेंट के दौरान लागू किया गया।

खेल को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 1950 में अखिल भारतीय कबड्डी महासंघ का गठन किया गया और वर्ष 1952 से सीनियर राष्ट्रीय चैम्पियनशिप शुरू हुई। भारत और एशिया के पड़ोसी देशों में खेल को लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से भारतीय ओलंपिक संघ (IOA) से संबद्ध नई संस्था, एमेच्योर कबड्डी फेडरेशन ऑफ इंडिया वर्ष 1972 से अस्तित्व में आई। इस संस्था के गठन के बाद, कबड्डी ने एक नया रूप लिया और जूनियर और सब–जूनियर लड़के और लड़कियों के लिए राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताएं भी शुरू हुई।

कबड्डी का पहला विश्व कप 2004 में मुंबई (भारत) में आयोजित किया गया था भारत ने फाइनल में ईरान को हराकर पहला विश्व कप जीता था। दूसरा विश्व कप 2007 में पनवेल (भारत) में आयोजित किया गया और भारत एक बार फिर चैम्पियन बना।

पहली एशियाई महिला चैम्पियनशिप 2005 में हैदराबाद में आयोजित की गई थी और भारत ने इसमें स्वर्ण पदक जीता था। महिला कबड्डी को पहली बार 2006 में कोलंबो, श्रीलंका में आयोजित दक्षिण एशियाई खेलों में शामिल किया गया था।

कबड्डी की वर्तमान स्थिति

चौगान स्टेडियम

चौगान स्टेडियम कबड्डी खेल का अस्थाई इनडोर हॉल है जिसमे कबड्डी मैट की सुविधा उपलब्ध है तथा राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी भी खेल का अभ्यास करते है। यहाँ नियमित रूप से लगभग 70 से 80 खिलाड़ी (बालक व बालिका) अभ्यास करते हैं। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी श्री नवनीत गौतम, (अर्जुन अवार्डी, स्वर्ण पदक विजेता विश्व कप व एशियाई खेल) श्री राजू लाल चौधरी (एशियाई खेल पदक विजेता) सचिन तंवर (स्वर्ण पदक विजेता एशियाई खेल) आदि अभ्यास करते है।

सवाई मान सिंह स्टेडियम

स्टेडियम में कबड्डी खेल के लिए मिट्टी के खेल मैदान है एक मल्टी पर्पज इनडोर स्टेडियम भी उपलब्ध है जिसमें समय–समय पर राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है इसमें प्रो कबड्डी लीग का आयोजन कई बार हो चुका है। यहॉ पर भी नियमित रूप से कबड्डी खेल का अभ्यास और प्रशिक्षण उपलब्ध करवाया जाता है।

विधाधर नगर स्टेडियम

स्टेडियम में मिट्टी का खेल मैदान उपलब्ध है। भारतीय खेल प्राधिकरण द्वारा कबड्डी खेल की कबड्डी एकेडमी संचालित की जाती है। राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद द्वारा भी कबड्डी खेल का प्रशिक्षक नियुक्त किया गया है जिससे कबड्डी खेल का नियमित अभ्यास किया जाता है।

जयपुर जिले में कबड्डी खेल का नियमित रूप से अभ्यास गोविन्दगढ़, भमोरी, सांभर, बस्सी, चाकसू, शाहपुरा, जमवारामगढ, सांगानेर आदि जगह पर किया जा रहा है।

भविष्य की कार्ययोजना

- चौगान स्टेडियम में कबड्डी खेल का नियमित अभ्यास किया जाता है यह अस्थायी इनडोर स्टेडियम होने के कारण खिलाडियों को अभ्यास में असुविधा होती है इस कारण चौगान स्टेडियम में कबड्डी खेल का स्थायी इनडोर स्टेडियम होना आवश्यक है। अतः चौगान स्टेडियम में पुराना तरणताल क्षतिग्रस्त स्थिति में खाली पडा है। जिसमें कबड्डी के लिए इनडोर हॉल बनाया जाना प्रस्तावित है। जिले में कबड्डी को प्रोत्साहित करने के लिए एवं खिलाडियों को उचित प्रशिक्षण, सुविधाऐं मुहैया करवाने के लिए कबड्डी खेल एकेडमी खोलना प्रस्तावित है।
- प्रत्येक वर्ष 25–25 महिला/पुरूष कबड्डी खिलाडियों को कबड्डी एक्सचेन्ज प्रोग्राम के तहत पंजाब, गुजरात, कर्नाटक व हरियाणा राज्यों के राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय कबड्डी खिलाडियों एवं संस्थान से रूबरू करवाया जाएगा।

- प्रत्येक राजस्व गांव/ग्राम पंचायत/ब्लॉक स्तर पर कबड्डी का मिट्टी का मैदान बनवाया जाएगा।
- ग्राम पंचायत स्तर/ब्लॉक स्तर/जिला स्तर पर जयपुर कबड्डी प्रीमियर लीग का आयोजन करवाना, समस्त आयुवर्ग महिला एवं पुरूषों की भागीदारी सुनिश्चित करना व प्रशिक्षक नियुक्त करने का कार्य किया जाएगा।
- जिले के प्रत्येक उपखण्ड के अन्तर्गत आने वाले क्षेत्र (ग्राम/ग्राम पंचायत) से प्रतियोगिता उपरान्त टीम (पुरूष एवं महिला) का चयन कर प्रत्येक उपखण्ड पर 1–1 टीम का गठन किया जाएगा।
- जिले में कुल 16–16 टीमों का चयन कर उनके मध्य कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन करवाया जाएगा तथा फाइनल स्तर का मुकाबला जिला स्तर पर करवाया जाएगा।
- प्रतियोगिता में शामिल होने वाले सभी 16–16 टीम के खिलाडियों को आवश्यक सामग्री उपलब्ध करवाई जायेगी।
- कबड्डी के खेल का प्रचार होर्डिंग के माध्यम से, समाचार पत्र, इलेक्ट्रोनिक मीडिया द्वारा प्रचार प्रसार करना, अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता आयोजित करना। राज्य सरकार द्वारा आउट ऑफ टर्न में दी गई नियुक्तियों में श्रीमती शालिनी पाठक उप अधीक्षक राजस्थान पुलिस, श्री राजू लाल चौधरी उप अधीक्षक राजस्थान पुलिस में नियुक्ति दी गई। ऐसी विभुतियों से समय–समय पर खिलाडियों को मिलवाया जाएगा।
- स्तरीय प्रशिक्षकों द्वारा खेल प्रतिभाओं को गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण मुहैया करवाने के लिए एनआईएस डिप्लोमा प्राप्त प्रशिक्षक नियुक्त किया जाना प्रस्तावित है।
- विश्वस्तरीय/राज्य स्तरीय/जिला स्तरीय कबड्डी आइकन से युवा खिलाडियों को रूबरू करवाने हेतु प्रत्येक माह वेबिनार/सेमिनार आयोजित करवाये जायेगें।
- खेल प्रतिभाओं के शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए आवश्यक संसाधन एवं वातावरण उपलब्ध करवाने के लिए योग शिविर एवं बौद्धिक क्रिया शिविर आयोजित करवाकर खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित किया जाएगा।
- ब्लॉक स्तर व जिला स्तर मुख्यालय पर कबड्डी मैट की सुविधा होना आवश्यक है क्योंकि कबड्डी की जिला स्तर, राज्य स्तर, राष्ट्रीय स्तर व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिताएं मैट पर आयोजित करवाई जाती है।
- चयनित प्रतिभावान युवा कबड्डी खिलाडियों को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं के लिए तैयार करने हेतु आवासीय प्रशिक्षण छात्रावास उपलब्ध करवाया जाएगा।
- खिलाडियों के लिए व्यायामशाला एवं ओपन जिम की व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जायेगी जिससे खिलाड़ी कबड्डी खेल में अच्छा प्रदर्शन कर सके।

- खेल प्रतिभाओं को डॉक्टर से डाईट चार्ट बनवाकर स्तरीय पोषण मुहैया करवाया जाएगा।
- ग्राम पंचायतों/ब्लॉकों के मध्य पंच गौरव को प्रोत्साहित करने के लिए स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करना।
- ब्लॉक व जिला स्तर पर गैर सरकारी संगठनों, सीएसआर फाउण्डेशन, उद्योग संघो एवं व्यापार मण्डलों से सहयोग लिया जाएगा।
- खेल प्रतिभाओं की उपलब्धियों की सक्सेस स्टोरी बनाकर व्यापक प्रचार–प्रसार सुनिश्चित करना ताकि ज्यादा से ज्यादा खेल प्रतिभाएं कबड्डी के क्षेत्र में उभर कर आ सके।
- सभी सरकारी/निजी विद्यालयों में प्रत्येक शनिवार को कबड्डी खेल का आयोजन करवाया जाएगा।
- कबड्डी से सम्बन्धित समस्त प्रकार की जानकारी हेतु ऑनलाईन पॉर्टल लॉन्च किया जाएगा।

नोडल अधिकारी

नोडल अधिकारी– श्री मानसिंह, खेल अधिकारी चौगान स्टेडियम जयपुर। 9414337059

उपनोडल अधिकारी– श्री राजेश कुमार टेलर , वुशू प्रशिक्षक 9314441439

Created

कलक्ट्रेट जयपुर, राजस्थान
ई मेल- dsojpr.des@rajasthan.gov.in